Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

सामाजिक विज्ञान

द्वितीय – प्रश्न पत्र

भाग – 2

इतिहास और राजनीति

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE – 2022

इतिहास और राजनीति

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्राचीन इतिहास	1
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता	3
3.	वैदिक काल	9
4.	मौर्य एवं गुप्त काल	13
5.	जैन एवं बौद्ध धर्म	33
6.	सूफी एवं भक्ति आन्दोलन	40
7.	मुगल काल	52
8.	शिवाजी की विरासत	64
9.	1857 का स्वतंत्रता	68
10.	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एवं आरंभिक गतिविधियां	71
11.	महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन	81
12.	सुभास चंद्र बोस और भारतीय सेना (INA)	92
13.	अमेरिकी स्वतंत्रता, फ्रांसीसी क्रांति और रूसी क्रांति	95
	राजनीति	
1.	राजनीति विज्ञान और राजनीतिक सिद्धान्त – • शक्ति (Power) • वैधता (Legitimacy) • सम्प्रभुता (Sovereignty) • राज्य (State) • अधिकार (Rights) • समानता (Equality) • स्वतंत्रता (Liberty) • न्याय (Justice)	106

2.	अम्बेडकर एवं भारतीय संविधान का निर्माण व विशेशताएँ	154
3.	मौलिक अधिकार, मौलिक कर्त्तव्य	160
4.	नीति निदेशक सिद्धान्त/तत्व	162
5.	भारत में संघीय व्यवस्था	164
6.	संघ एवं राज्य सरकार – विधायिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका	171
7.	स्थानीय स्वशासन	208
8.	संवैधानिक संशोधन	214
9.	पडोसी राज्यों के साथ भारत के संबंध	220
10.	राष्ट्र संघ तथा संयुक्त राष्ट्र संघ	226
11.	भारत का विश्व शांति में योगदान	233

मुगलकाल में शिक्षा, भाषा, साहित्य, कला, स्थापत्य कला का विकास शिवाजी व मराठा स्वराज

- मुगलकाल को उसकी बहुमुखी सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण भारतीय इतिहास का द्वितीय क्लासिकी युग कहा गया है।
- इस काल में स्थापत्य कला, वास्तुकला, संगीतकला, चित्रकला और साहित्य का विकास हुआ अर्थात् ललितकला की उन्नति हुई।

स्थापत्य कला

- मुगल सम्राट स्थापत्य कला के प्रेमी थे।
- मुगलकाल में ईरानी और हिन्दू स्थापत्य शैली के समन्वय द्वारा मुगलशैली का उद्‌भव व विकास हुआ।
- फर्ग्युसन ने इसे विदेशी शैली तथा हावेल ने इसे देशी व विदेशी शैलियों का उत्तम सम्मिश्रण बताया।

मुगल स्थापत्य की मुख्य विशेषता

- संगमरमर के पत्थरों पर हीरे जवाहरात से की गई जड़ावत (पित्राडूरा)
- महलो तथा विलासभवनों में बहते पानी का प्रयोग।

बाबर के समय की स्थापत्य कला

- मुगलकालीन स्थापत्य कला की शुरूआत बाबर के समय से होती है।
- बाबर को दिल्ली व आगरा की तुर्क तथा अफगाान सुल्तानों द्वारा निर्मित इमारत पसंद नहीं आई।
- बाबर ग्वालियर में मानसिंह व विक्रमाजीत महलों की स्थापत्य शैली से अत्यधिक प्रभावित हुआ।
- बाबर के महल केवल नमूने बने जो अधिक समय तक काल के प्रहारों को न सह सकें। उनकी केवल दो ईमारतें ही बची हैं।
  (1) पानीपत की काबुली बाग की विशाल मस्जिद (1529 ई.)
  (2) रूहेलखण्ड (उत्तरप्रदेश) संभलकी जामा मस्जिद।
- बाबर ने ज्यामितीय विधि पर आधारित एक उद्यान नूर अफगान के नाम से आगरा में लगवाया (पहला बगीचा)

हूमांयू के समय मुगल स्थापत्य –

- हुँमायूँ भी यद्यपि कलाप्रेमी था किन्तु उसकी कोई कलात्मक ईमारत नही बची।
- हुँमायूँ ने दिल्ली में दिन पनाह (विश्व का शरणस्थल) नामक एक नगर का निर्माण करवाया (1533) जो आज पुराने किले के नाम से विख्यात है।
- हुँमायूँ ने दो अन्य ईमारते भी बनवाई–
  (1) आगरा के निकट मस्जिद
  (2) हिसार के फतेहबाद के निकट (फारसी शैली में)

अकबर कालीन स्थापत्य कला

अकबर के शासन काल की सबसे पहली ईमारत दिल्ली में हुँमायूँ का मकबरा है जिसे अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगम ने 1565 में बनवाया था। इसकी निम्न विशेषताएं है –

- दोहरी गुम्बदवाल भारत का पहला मकबरा है।
- इसमें मुगलवंश के सर्वाधिक लोगों को दफनाया गया है।
- इस मकबरे को ताजमहल का पूर्वागामी कहा जाता है।
- यह मकबरा फारसी आदर्श की भारतीय अभिव्यक्ति है।
- इसमें पहली बार चारबाग पद्धति का प्रयोग किया गया।
- इसमें प्रधान कारीगर मीरक मिर्जा ग्यासी भी ईरानी (फारसी) था।
- 1857 की क्रान्ति के समय बहादुरशाह जफर तथा उसके तीन पुत्र को यही 22 सितम्बर 1857 को हड़सन ने गिरफ्तार किया था।
- 1993 ई. में इसे यूनेस्को ने विश्वधरोहर सूची में शामिल किया।
- इस मकबरे की योजना फारसी मॉडल एवं वास्तुकला पंचरथ रचना से ली गई।
- अकबर के काल में सुन्दर ईमारतें बनी, उनके बारे में अबुल फजल ने कहा है कि "सम्राट सुन्दर ईमारतों की योजना बनाता है और अपने मस्तिष्क और हृदय के विचारों को पत्थर और गारे का रूप दे देता है। "
- अकबर ने हिन्दू मुस्लिम शैलियों का समन्वय किया और एक नई शैली का विकास किया।
- अकबर की नवीन शैली का सबसे पहला नमूना आगरा का लाल किला (कासीम खाँ के नेतृत्व में) है।
- आगरा के किले की रूपरेखा मानसिंह द्वारा बनाये गये ग्वालियर किले से मिलती जुलती है।
- इस किले में अकबरी महल (कोई सजावट नहीं) और जहाँगीरी महल (हिन्दू डिजाईन पर) है।
- इसमें 500 से अधिक महल हैं।
- अकबर द्वारा बनाया गया लाहौर का किला भी लगभग आगरा के किले के समान ही है (जहाँगीरी महल की नकल)
- अकबर की शिल्प कला की सबसे बड़ी सफलता उसकी नई राजधानी फतेहपुर सीकरी की सुन्दर ईमारतों में है (1571) जिन्हें 1986 ई. में यूनेस्को ने विश्वधरोहर की सूची में शामिल किया है। इसमें निम्न महल है –
  - दीवाने खास (एक घनाकार आकृति)
  - दीवाने आम (एक आयताकार)
  - पंचमहल/हवामहल (पिरामीड के आकार की नालन्दा के बौद्ध विहार ही प्रेरणा के आधार पर)
  - मरियम का महल (मुगल चित्रकारी पर आधारित)
  - जोधाबाई का महल (सीकरी का सबसे बड़ा महल, गुजराती शैली का प्रभाव)
  - बीरबल महल
  - जामा मस्जिद (फतेहपुर का गौरव कहा जाता है)
  - बुलन्द दरवाजा (एशिया का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार गुजरात जीत की खुशी में)
  - शेख सलीम चिश्ती का मकबरा
  - ईस्लाम शाह का मकबरा (पहली वर्गाकार मेहराब का प्रयोग)
  - तुर्की सुल्ताना का महल (पार्सी ब्राउन ने इसे स्थापत्य कला का मोती कहा है।
  - फर्ग्यूसन ने ठीक ही कहा हे कि फतेहपुर सीकरी किसी महान व्यक्ति के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है।
  - अपने शासन काल के अन्तिम समय में अकबर ने इलाहाबाद चालीस स्तम्भों वाले एक विशाल किले का निर्माण कराया।

Note:- 1561 ई. में अकबर की धाय माँ अनगा ने पुराने किले के सामने खेरूल मंजिल मस्जिद का निर्माण करवाया। इसमें सहायता दिल्ली के गवर्नर शिहाबुदीन ने की थी।

गुरू सलीम चिश्ती के मकबरे में जहाँगीर गवर्नर लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर संगमरमर लगवाया था ने।

जहाँगीर की स्थापत्य कला

- जन्म – 13 अगस्त 1565
- राज्याभिषेक – 3 नवम्बर, 1605 (आगरा के किले में)
- जहाँगीर के काल में स्थापत्य कला में कोई महत्वपूर्ण विकास नहीं हुआ। जहाँगीर का ध्यान चित्रकला की ओर ज्यादा था।
- आगरा के पास सिकन्दरा में स्थित अकबर का मकबरा (जिसके निर्माण की योजना स्वयं अकबर ने बनाई थी किन्तु निर्माण जहाँगीर ने 1613 ई. में करवाया था। यह एक गुम्बद विहीन मकबरा है ।
- जहाँगीर के काल में नूरजहाँ के द्वारा बनाया गया एतमा दुधौला मकबरा प्रसिद्ध है। इसमें पहली बार पित्राडुरा का प्रयोग किया गया था। (आगरा)
- सहादरा (लाहौर) में जहाँगीर का मकबरा उसकी बेगम नूरजहाँ ने बनवाया था जिसका नक्शा स्वयं जहाँगीर ने बनाया था। इसके ऊपर संगमरमर का एक मंडप था जिसे बाद में सिक्खों ने उतार लिया था।
- एकमात्र शासक जहांगीर है जिसके समय कोई मस्जिद का निर्माण नहीं हुआ।
- जहाँगीर ने कश्मीर मे प्रसिद्ध शालीमार बाग की स्थापना की थी।
- जहाँगीर के शासनकाल के अन्तिम व शाहजहाँ के शासनकाल के प्रारम्भिक दिनों में निर्मित दिल्ली में अब्दुल रहीम खान खाना का मकबरा है, जो मुख्य रूप से हुँमायूँ के मकबरे की प्रतिकृति है। पर कुछ मामलों में इसमें ताजमहल का पूर्वाभास हांता है।

शाहजहाँ कालीन स्थापत्य कला

- शाहजहाँ का शासन काल मुगल स्थापत्य का चरमोत्कर्षक काल था इसलिए शाहजहाँ को निर्माताओं का प्रिंस कहा जाता है।
- आर्शीवाद लाल श्रीवास्तव ने शाहजहाँ के शासनकाल को वास्तुकला या स्थापत्य कला की दृष्टि से स्वर्णकाल कहा है।
- आगरा के किले में स्थित दीवानेआम (1627) संगमरमर से बनी शाहजहाँ की पहली ईमारत है।
- दीवानेखास (1637), मोती मस्जिद (आगरा किले की सबसे सुन्दर व आकर्षक ईमारत (1654), शीशमहल, खासमहल, नगीना मस्जिद आदि आगरे के किले में ईमारते बनवाईं।

दिल्ली की ईमारतें –

- शाहजहाँ नें 1638–1648 ई. के बीच दिल्ली में शाजहाँबाद के नाम से राजधानी बनाई।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में 1648 ई. में सबसे महत्वपूर्ण ईमारत लाल किला बनवाया जिसका शिल्पकार हमीद अहमद थे। इसमे दो स्तर बनवाये – पश्चिमी द्वार – लाहोरी द्वार, दक्षिणी द्वार।
- इसी लाल किले को 2007 ई. में यूनेस्को ने विश्वधरोहर की सूची में शामिल किया। इसमें शाहजहाँ ने दीवाने आम (इसमें तख्ते तावज रखा जाता था।)
- दिवाने खास (इसके अन्दर की छत चाँदी की बनी है, अमीर खुसरो ने इसके लिए कहा है कि अगर दुनिया में कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है ।
- लाल किले के पास ही 1648 ई. में जामा मस्जिद बनवाई।
- शाहजहाँ ने अपनी प्रिय पत्नी अर्जुमंद बानो की याद में मुमताज महल का मकबरा बनाया जिसे ताजमहल कहते है।
- ठसका निर्माण 1631–53 कुल 22 वर्षों मे 9 करोड़ रू. की लागत से हुआ।
- ताजमहल का मकबरा दिल्ली में स्थित हुमायूं के मकबरे से प्रेरित था।

शिवाजी एवं मराठा स्वराज

(i) शिवाजी –

- जन्म – 28 अप्रैल, 1627 में पूना (महाराष्ट्र) के समीप शिवनेर के किले में।
- माता – जीजाबाई
- पिता – शाहजी भौंसले
- शिवाजी के पिता शाहजी बीजापुर के सामंत थे।
- शिवाजी का बाल्यकाल संरक्षक दादा कोंडदेव की देखरेख में हुआ। इन्होंने कोंडदेव से ही सेना शिक्षा को प्राप्त किया।
- शिवाजी के गुरू रामदास थे।
- शिवाजी ने बाल्यकाल में ही पूना जागीर का दायित्व संभाला था।
- शिवाजी का बीजापुर के विरूद्ध सैन्य अभियान – प्रारम्भिक सैन्य अभियान सुल्तान आदिलशाह के काल में 1646 ई. में बीजापुर के तोरण नामक पहाड़ी पर अधिकार कर लिया था।
- 1646 ई. में रामगढ़, चाकन तथा 1647 ई. में बारामती, इन्द्रपुर, सिंहगढ़, पुरन्दर के दुर्ग जीते, 1656 ई. कल्याण, जावली दुर्ग पर अधिकार कर लिया था।
- शिवाजी ने 1656 ई. में रामगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।
- 1659 ई. में अफजलखाँ एक बड़ी सेना लेकर शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ, अफजल ने अपने दूत कृष्णजी भास्कर को भेजकर शिवाजी के साथ संधि वार्ता का प्रस्ताव भेजा।
- अफजल खाँ ने शिवाजी को मारने का प्रयास किया तो शिवाजी ने बाघनख का प्रयोग करते हुए अफजल खाँ को मौत के घाट उतार दिया।

शिवाजी और मुगल

- औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए शाइस्ताखाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया तथा शाइस्ताखाँ ने पूना पर अधिकार कर लिया।
- 15 अप्रैल 1663 को रात्रि के समय शिवाजी ने पूना जाकर आक्रमण कर दिया। शाइस्ताखाँ अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गया फिर औरंगजेब ने शाइस्ताखाँ को असफलता के लिए दण्डित करने के लिए बंगाल भेज दिया।
- इसके बाद औरंगजेब ने शाहजादा मुअज्जम और मारवाड़ के जसवंत सिंह को भेजा पर वे भी असफल रहे। इसके बाद शिवाजी ने 1664 ई. में सूरत नगर को लूट लिया।
- सूरत लूटने के बाद में शिवाजी को हराने के लिए मिर्जा राजा जयसिंह के साथ सेनानायक दिलेर खाँ तथा ताज खाँ का भेजा।
- जयसिंह का कथन – हम शिवा को वृत्त के घेरे की तरह बाँध लेंगे।
- जयसिंह ने मराठाओं को लोभ देकर अपने पक्ष में कर लिया व मराठा राज्य पर आक्रमण करके शिवाजी को पुरंदर के किले में कैद कर लिया।

  विशेष – शिवाजी व मिर्जा राजा जय सिंह के मध्य जून 1665 में पुरंदर की संधि हुई।
- पुरंदर संधि के तहत शिवाजी ने 35 में से 23 दुर्गो को मुगलों को दिये तथा अपने पास मात्र 12 दुर्ग रखे। शिवा के बड़े पुत्र शंभाजी को मुगल दरबार में 5000 का मनसबदार मिला।
- पुरंदर संधि के तहत शिवा को मुगल दरबार में व्यक्तिगत रूप से आने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता था।

- पुरंदर संधि के समय वहाँ फ्रांसीसी यात्री बर्नियर मौजूद था।
- एक बार शिवाजी को मुगल दरबार में जाने के लिए जयसिंह ने मना लिया अतः शिवा मई 1666 ई. को आगरा के मुगल में गया तो औरंगजेब ने शिवाजी के प्रति रूखा व्यवहार करते हुए मनसबदारों की तृतीय पंक्ति में खड़ा कर दिया तो शिवाजी कष्ट होकर वहाँ से निकल गये पर शिवाजी को गिरफ्तार कर लिया तब एक दिन फलों के टोकरो में छिपकर वहाँ से निकलने में सफल हो गये।
- 1667 ई. में जसवंत सिंह की मध्यस्थता से मुगल–मराठा संधि हुई जिसके अंतर्गत शिवाजी को एक स्वतंत्र शासक मान लिया गया।
- शिवाजी ने 1670 ई. में सूरत पर पुनः आक्रमण किया व अपने खोये हुए क्षेत्रों पर पुनः अधिकार कर लिया।

शिवाजी का राज्याभिषेक

- 1674 ई.में राजधानी रामगढ़ में गंगाभट्ट नामक ब्राह्मण से करवाया था।
- उपाधि – छत्रपति, हिन्दू धर्मोद्धारक, गौ ब्राह्मण प्रतिपालक
- शिवाजी का II राज्याभिषेक – निश्चलपुरी गोस्वामी
- ''शिवाजी हिंदू प्रजाति का अंतिम प्रतिभा संपन्न व्यक्ति और राष्ट्र निर्माता था'' – जदूनाथ
- शिवाजी एक धर्म – सहिष्णु शासक था, इसनें विद्वान ब्राह्मणों को प्रोत्साहन देनें के लिए उन्होने एक पृथेक धनराशि की व्याख्या की थी।
- शिवाजी ने बाबा माकूल के लिए आश्रम बनवाया
- **शिवाजी द्वारा चौथ व सरदेशमुखी करों की वसुली संपूर्ण भारत में राज्य विस्तार का साधन था।**
- लोकमान्य तिलक का शिवाजी उत्सव 1895 काफी प्रसिद्ध रहा।

(ii) शम्भाजी (1680–1689 ई.)

- 20 जुलाई, 1680 को राजाराम को गद्दी से अपदस्थ कर राज्य प्राप्त किया।
- औरंगजेब ने शंभाजी व कवि कलश की हत्या करवा दी थी।

(iii) राजाराम

- राज्याभिषेक – रामगढ़
- राजाराम के शासन में मराठा स्वतंत्रता संग्राम हुआ, जो 1707 ई. में मुगलो द्वारा शाहू को मराठा छत्रपति स्वीकार करनें तक चलता रहा।

(iv) शिवाजी द्वितीय

- राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा पत्नी ताराबाई ने चार वर्षीय पुत्र को शिवाजी II के नाम से गद्दी पर बैठाया था तथा इसने रायगढ़, सतारा, सिंहगढ आदि किलो को जीता था।

शिवाजी का प्रशासन

- शिवाजी का प्रशासन निरंकुश लोकहितकारी था।
- प्रशासन के शीर्ष पर राजा होता था जो छत्रपति की उपाधि धारण करता था।
- राजा अंतिम न्यायाधीश, विधि का निर्माता, प्रशासक और सेनापति होता था।
- शिवाजी का राज्य स्वराज्य स्वदेश कहलाता था।

1857 का स्वतंत्रता संग्राम

जानकारी के स्त्रोत

1. आर.सी मजूमदार – सिपाही विद्रोह और 1857 का विद्रोह (The Sepoy Mutiny and the Revolt of 1857)
2. बी.डी सावरकर – भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (The First War of Indian Independence)
3. एस.एस सेन – 1857
4. अशोक मेहता – 1857 एक महान विद्रोही (A Great Rebeillion)
5. प्रीचाक्र – राजपूताना में व्रिदोह (The Mutiny in Rajputana)

1857 के विद्रोह के दौरान

इंग्लैण्ड की महारानी – विक्टोरिया
इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री – पार्मस्टन
भारत का गवर्नर जनरल – कैनिंग
कंपनी का मुख्य सेनापति – जार्ज एनिसन

1857 के विद्रोह की प्रकृति

1. लारेन्स, सीले, ट्रेविलियन व टी.आर होम्स के अनुसार – सैनिक विद्रोह
2. एल.ई.आर रीज के अनुसार धर्मांर्थों का ईसाइयों के विरूद्ध युद्ध था।
3. आउट्रम के अनुसार हिन्दू–मुस्लिम षड्यंत्र।
4. वी.डी सावरकर के अनुसार – सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम।
5. बैंजामिन डिजरेली के अनुसार – एक राष्ट्रीय विद्रोह था।

1857 के विद्रोह की तिथि – 31 मई 1857
विद्रोह का चिन्ह – रोटी व कमल

विद्रोह के कारण

1. अंग्रेजों की भू–राजस्व व्यवस्था।
2. वेलेजली की सहायक संधि।
3. सूर्यास्त कानून।
4. **इनाम कमीशन** – बम्बई में इनाम कमीशन के माध्यम से लगभग 20000 जागीरों को जब्त कर लिया गया।
5. **लेक्स लोकी कानून/धार्मिक अयोग्यता अधिनियम 1850** – इस कानून के माध्यम से अंगेजी सरकार के द्वारा हिन्दू रिति रिवाजो में परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया। जिसके तहत ईसाई धर्म को अपनाने पर भी भारतीयों को पैतृक सम्पति से वंचित नहीं किया जायेगा।
6. **डाकघर अधिनियम 1854** – इस कानून के माध्यम से सैनिकों को दी जाने वाली निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त की दी गई।
7. **सेना भर्ती अधिनियम 1856** – कैनिंग के काल में इस अधिनियम के तहत सभी भारतीय सैनिकों का समुद्र पार जाना अनिवार्य कर दिया गया। अंग्रेजी सरकार ने ब्राउनबेस नामक बन्दूक के स्थान पर एनफील्ड राइफल का प्रयोग किया इस बन्दूक के कारतुसों में गाय व सुअर की चर्बी का प्रयोग किया गया था। चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग को 1857 के विद्रोह में तात्कालिक कारण माना गया।

29 मार्च 1857 – बैरकपुर छावनी में स्थित 34 वीं रेजीमेंट के जवान मंगल पांडे ने अपने दो अंग्रेजी अधिकारी लेफ्टिनेंट बाग व साजैट ह्यूसन की हत्या कर दी।

8 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे को फाँसी दी गयी। मंगल पांडे उत्तर प्रदेश के बलिया जिले का रहने वाला था।

10 मई को मेरठ में तथा 11 मई को दिल्ली में क्रांति हुई। क्रांतिकारियो ने बहादुर शाह जफर को भारत का शासक घोषित कर दिया। दिल्ली में बख्त खाँ ने क्रान्ति का नेतृत्व किया। मुगल बादशाह जफर कों हुमायूँ के मकबरे से गिरफ्तार किया गया। रंगून में बहादुर शाह जफर की कब्र है।

विद्रोह का प्रसार – मद्रास में विद्रोह नहीं हुआ।

1. **लखनऊ** – 1856 में आऊट्रम की रिपोर्ट को आधार बनाकर अवध को सुशासन के आधार पर अंग्रेजी सरकार मे विलय कर दिया गया।
   लखनऊ में बेगम हजरत महल ने ब्रिजिश कादिर को नवाब घोषित कर दिया और बेगम हजरत महल ने अंग्रेजों के साथ संघर्ष किया। बेगम हजरत महल को महक परी के नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने अंग्रेजो के समक्ष आत्मसमपर्ण नहीं किया और नेपाल चली गयी।
   अंग्रेज अधिकारी केम्पबेल के नेतृत्व में पुनः लखनऊ पर अधिकार कर लिया गया।

2. **कानपुर** – यहाँ पेशवा बाजीराव 2 के दत्तक पुत्र नाना साहिब ने विद्रोह किया। नाना साहिब (चोई पंथ)की ओर से तात्या टोपे ने अंग्रेजों साथ संघर्ष किया। ग्वालियर में क्रांति का नेतृत्व तात्या टोपे (रामचन्द्र पांडुरंग) के द्वारा किया गया।
   मानसिंह नामक व्यक्ति के द्वारा तात्या टोपे को धोखे से गिरफ्तार करवा दिया गया और तात्या टोपे को फाँसी की सजा दी गयी।
   अंग्रेज अधिकारी जनरल नील ने कानपुर पर अधिकार कर लिया।
   शावर्स ने फाँसी की आलोचना की।

3. **झांसी**
   - 4 जून 1857
   - **नेतृत्व** – रानी लक्ष्मीबाई – महलपरी, मणिकर्णिका
   - **अंग्रेज अधिकारी**– जनरल ह्यूरोज – "लक्ष्मी बाई 1857 के विद्रोह के दौरान सोती हुई महिलाओं में अकेली जागृत मर्द थी।

स्थान	नेतृत्व
1. बिहार	कुंवर सिंह
2. इलाहाबाद	लियाकत अली
3. सतारा	रंगो जी, बापू जी, दास गुप्ते जी
4. फैजाबाद	मौलवी अहमद उल्ला जिहाद का नारा
5. बरेली	खान बहादुर खाँ
6. मंदसौर	फिरोजशाह
7. उडीसा	सुरेन्द्र शाही व उज्जवल शाही
8. असम	मनीराम दता
9. गोरखपुर	गजाधर सिंह
10. मथूरा	देवीसिंह
11. मेरठ व उसके आस–पास	कदम सिंह

- 1857 का विद्रोह लगभग 15 महिनों तक चला इस विद्रोह के बाद से EIC का शासन समाप्त हो गया। भारत में ब्रिटिश संसद का शासन शुरू हुआ।
- भारत का गवर्नर जनरल अब भारत का वायसराय कहा जाने लगा । कैनिंग को पहला वायसराय बनाया गया।
- 1 नवम्बर 1958 को इलाहाबाद के मिंटो पाक्र में महारानी का आयोजन किया गया जिसमें कैनिंग के द्वारा महारानी का घोषणा पत्र पढा गया।
- इसमें कहा गया कि जाति, भाषा, लिंग व स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जायेगा।
- सेना के पुनर्गठन हेतू पील कमीशन बनाया जायेगा तथा भारत के शासन की देखभाल हेतु भारत सचिव नामक पद गठित किया जायेगा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एवं आरंभिक गतिविधियां

पृष्ठभूमि

- 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध से ही क्षेत्रीय स्तर पर सीमित उद्देश्यों वाली अनेक संस्थाओं का गठन होना प्रारंभ हो गया था । 1850 के बाद संचार एवं यातायात के साधनों के विकास, जनता के मध्य सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक जागरूकता बढने से निर्मित संस्थाओं ने अखिल भारतीय स्वरूप लेना प्रारंभ कर दिया । इसी समय एक सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारी ए.ओ. ह्यूम द्वारा ब्रिटिश संसद एवं प्रशासन को भारतवासियों की समस्याओं से अवगत कराने हेतु एक अखिल भारतीय संगठन के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के विचार को मूर्त रूप दिया गया ।
- एक सिविल सेवक के रूप में कार्यरत रहते हुए ह्यूम भारतीय जनमानस संबंधी समस्याओं से भलीभांति अवगत थे । उन्होंने ब्रिटिश प्रशासन एवं भारतवासियों के मध्य बढती दूरी को कम करने औरएक संस्था के माध्यम से शासित वर्ग की समस्याओं से प्रशासन को अवगत कराने के उद्देश्य से एक मंच के रूप में कांग्रेस की स्थापना की । इटली के राष्ट्रवादी मैजिनों और गैरीवाल्डी के विचारों से प्रभावित तथा 1883 में इंडियन नेशनल कॉन्फ्रेंस की स्थापना करने वाले सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के क्रियाकलापों से भी ह्यूम चिंतित थे ।
  कांग्रेस पूर्व काल की राष्ट्रवादी मांगे ।
- प्रशासन के अधीन सिविल सेवाओं का भारतीयकरण
- प्रेस की स्वतंत्रता (वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट-1878का निरसन)
- सैन्य व्ययों में कटौती
- ब्रिटेन से आयात होने वाले सूती वस्त्रों पर आयात शुल्क आरोपण करना ।
- भारतीय न्यायाधीशों को भी यूरोपीय नागरिको पर आपराधिक मुकदमों की सुनवाई का अधिकार देना(इल्बर्ट बिल विवाद)
- भारतीयों को भी यूरोपियों के समान हथियार रखने का अधिकार देना ।
- अकाल और प्राकृतिक आपदाओं के समय पीडित लोगों की सहायता करना प्रशासन का कर्तव्य ।
- ब्रिटिश मतदाताओं को भी भारतीय समस्याओं से अवगत कराना जिससे ब्रिटिश संसद में भारतीय हितों के संरक्षक दल का बहुमत हो ।

कांग्रेस की स्थापना

- ह्यूम ने 1880 के बाद से प्रमुख भारतीय नेताओं से संपर्क स्थापित किया और मई 1885 में शिमला में वायसरॉय से भी भेंट की ।1884 में ह्यूम ने इंडियन नेशनल यूनियम की स्थापना की । वर्ष 1885 में यूनियन ने पूना में विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं की उपस्थिति में सम्मेलन आयोजित का निर्णय लिया था परन्तु पूना में प्लेग फैल जाने के कारण सम्मेलन का आयोजन बंबई के 'गोकुलदास तेजपाल संस्कृत' कॉलेज में हुआ था । यही अखिल भारतीय कांग्रेस की नींव पडी ।
- सम्मेलन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था तथा आगे कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व करने वाले अधिकांश समकालीन महत्वपूर्ण नेताओं जैसे दादा भाई नौरोजी(तीन बार अध्यक्ष), बदरुद्दी तैयबजी, फिरोजशाह मेहता, पी.आनन्द चारलू, रमेशचंद्र दत्त, आनंद मोहन बोस, गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय, जी. सुब्रह्मण्यम अयर, वी.राघवाचारी तथा दिनेश ई. वाचा आदि ने प्रतिनिधित्व किया ।
- बंबई में आयोजित प्रथत अधिवेशन की अध्यक्षता व्योमेश चंद्र बनर्जी ने की थी ।

सुभाष चंद्र बोस और भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)

- बोस ने भारतीय सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की लेकिन 1921 में सेवा से इस्तीफा दे दिया और स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए कांग्रेस में शामिल हो गए।
- चित्तरंजन दास उनके राजनीतिक गुरु थे।
- 1938: जवाहरलाल नेहरू के अध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय योजना समिति की स्थापना।
- 1939: उन्होंने पट्टाभी सीतारमैया (गांधीजी द्वारा समर्थित) को हराया और दूसरी बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने।
- वैचारिक मतभेद: त्रिपुरी (मध्य प्रदेश) में आयोजित कांग्रेस के 1939 के अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया।
- 1939: उन्होंने फॉरवर्ड ब्लॉक की नींव रखी।
- 1940: बोस ने रामगढ़ में एक समझौता-विरोधी सम्मेलन बुलाकर लोगों से आह्वान किया कि वे किसी भी संसाधन-पुरुषों, धन या सामग्री के साथ साम्राज्यवादी युद्ध में मदद न
- इसके लिए बोस को जुलाई 1940 में गिरफ्तार किया गया था।
- भूख हड़ताल के बाद, उन्हें दिसंबर 1940 में जेल से रिहा कर दिया गया और उन्हें नजरबंद कर दिया गया।
- जनवरी 1941: बोस अफगानिस्तान के रास्ते जर्मनी भाग गए थे।
- अप्रैल 1941: वह छद्म नाम ऑरलैंडो मज़ोट्टा के साथ हिटलर से मिले।
- हिटलर की मदद से उन्होंने 'फ्रीडम आर्मी' (मुक्ति सेना) की नींव रखी, जिसमें जर्मनी और इटली द्वारा कब्जा किए गए भारतीय मूल के युद्ध के सभी कैदी शामिल थे।
- जर्मन और भारतीय अधिकारी बोस को 'नेताजी' कहते थे।
- फ्री इंडिया सेंटर(जर्मनी) से प्रसिद्ध नारा 'जय हिंद' दिया।
- 1942: जर्मनी में "आजाद हिंद रेडियो" की स्थापना की।
- जनवरी 1943: उन्होंने जर्मनी छोड़ दिया और उसी वर्ष जुलाई में सिंगापुर पहुंचे और 1942 में कैप्टन मोहन सिंह द्वारा निर्मित भारतीय राष्ट्रीय सेना के सर्वोच्च कमांडर का पदभार ग्रहण किया।
- अक्टूबर 1943: आजाद हिंद की अनंतिम सरकार की नींव रखी।
- रंगून और सिंगापुर में मुख्यालय।
- बर्मा में "तुम मुझे खून दो, और मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का नारा दिया

भारतीय राष्ट्रीय सेना का उदय

- 1942 में भारतीय युद्धबंदियों (POWs)को शमी कर कैप्टन मोहन सिंह द्वारा गठन किया गया।
- सितंबर 1942: आईएनए का पहला डिवीजन 16,300 पुरुषों के साथ बनाया गया था।
- बैंकॉक में सम्मेलन: रासबिहारी बोस की अध्यक्षता में आईएनए को एक भारतीय स्वतंत्रता लीग के तहत रखने का निर्णय लिया।
- लीग की स्थापना 1942 में टोक्यो में हुई थी।
- 1943: रासबिहारी बोस ने भारतीय स्वतंत्रता लीग और आईएनए का नियंत्रण और नेतृत्व सुभाष चंद्र बोस को हस्तांतरित कर दिया।
- 25 अगस्त 1943: सुभाष बोस आईएनए के सर्वोच्च कमांडर बने।
- रानी झांसी रेजिमेंट: आईएनए के भीतर गठित एक महिला रेजिमेंट।
- जनवरी 1944 में आईएनए मुख्यालय को रंगून (बर्मा में) में स्थानांतरित कर दिया गया था, और सेना के रंगरूटों ने "चलो दिल्ली" के नारे लगाते हुए वहां से दिल्ली तक मार्च किया।

- 6 नवंबर, 1943: जापानी सेना द्वारा इन द्वीपों को आईएनए को दिए जाने के बाद अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का नाम क्रमशः शहिद द्वीप और स्वराज द्वीप रखा गया।
- मार्च 1944: आजाद हिंद फौज ने बर्मा सीमा पार की और भारतीय धरती पर आ पहुचे।
- मई 1944: आईएनए ने इंफाल और कोहिमा पर विजय प्राप्त की। बटालियन का नेतृत्व जापानी सेना के साथ शाह नवाज़ कर रहे थे।
- 6 जुलाई 1944: बोस ने आजाद हिंद रेडियो से महात्मा गांधी जी को 'राष्ट्रपिता' कहकर संबोधित किया।
- 15 अगस्त 1945: जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध में आत्मसमर्पण किया जिसके परिणामस्वरूप आईएनए ने आत्मसमर्पण किया।
- 18 अगस्त 1945: सुभाष बोस की ताइपे (ताइवान) में एक हवाई दुर्घटना में रहस्यमय ढंग से मृत्यु हो गई।

लाल किले में आईएनए पर मुकदमा (नवंबर 1945)

- दिल्ली के लाल किले में INA अधिकारियों का कोर्ट मार्शल हुआ।
- प्रारंभ में प्रेम कुमार सहगल (एक हिंदू), शाह नवाज खान (एक मुस्लिम), और गुरबख्श सिंह ढिल्लों (एक सिख) पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया था।
- भुलाभाई देसाई: आईएनए कैदियों के मुख्य बचाव पक्ष के वकील।
- अन्य प्रतिवादी: तेज बहादुर सप्रू, कैलाश नाथ काटजू, जवाहरलाल नेहरू, जिन्ना और आसफ अली।
- दोषी पाये गये तथा अधिकारियों का कोर्ट-मार्शल किया गया लेकिन व्यापक आंदोलन के परिणामस्वरूप उनकी सजा निलंबित कर दी गई।
- आईएनए के समर्थक: मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी, संघवादी, अकाली, जस्टिस पार्टी, रावलपिंडी में अहरार, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिंदू महासभा और सिख लीग।

आम चुनाव (1945-46)

- लॉर्ड वेवेल ने 19 सितंबर 1945 को केंद्रीय विधान सभा और राज्य परिषद के चुनाव की घोषणा की,जिसका आयोजन दिसंबर 1945 में किया गया था।
- कांग्रेस ने सेंट्रल असेंबली की कुल 102 सीटों में से 59 और गैर-मुस्लिम वोटों में से 91% पर जीत हासिल की।
- प्रांतीय चुनावों में, बंगाल, सिंध और पंजाब को छोड़कर अधिकांश प्रांतों में इसे बहुमत मिला।
- मुस्लिम लीग को 86.6% मुस्लिम वोट मिले।
- इसने सेंट्रल असेंबली में 30 आरक्षित सीटों पर जीत हासिल की और बंगाल और सिंध में बहुमत का दावा किया।
- 1937 के विपरीत, अब लीग ने खुद को मुसलमानों के बीच प्रमुख पार्टी के रूप में स्थापित कर लिया।
- लीग के नेताओं ने सिर्फ वोट मांगने के लिए प्रचार नहीं किया बल्कि भारत की आजादी के लिए अंतिम कार्रवाई का नेतृत्व करने के लिए चुनावों का इस्तेमाल किया।

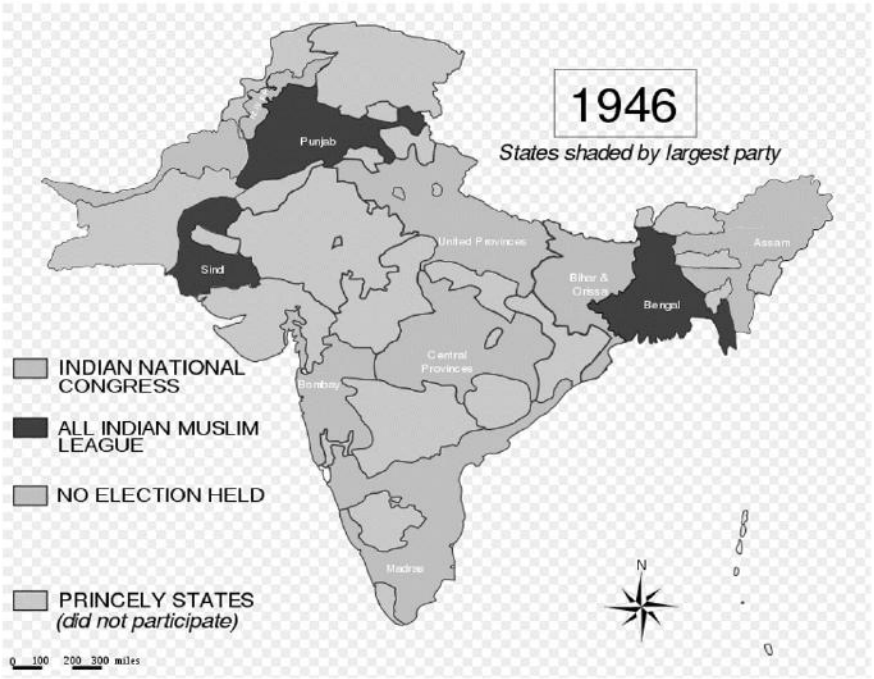

1945-46 की सर्दियों में विद्रोह की तीन घटनाये

- 21 नवंबर, 1945- कलकत्ता में आईएनए के मुकदमो के कारण।
- 11 फरवरी, 1946- कलकत्ता आईएनए अधिकारी राशिद अली को सात साल की सजा के खिलाफ।
- 18 फरवरी, 1946-बॉम्बे, रॉयल इंडियन नेवी द्वारा हड़ताल।

नौसेना द्वारा विद्रोह

- फरवरी 1946: एचएमआईएस तलवार की रॉयल इंडियन नेवी (आरआईएन) निम्नलिखित के विरोध में हड़ताल पर चले गए:
    - नस्लीय भेदभाव (भारतीय और गोरे सैनिकों के लिए समान वेतन की मांग)
    - खराब भोजन
    - वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दुर्व्यवहार
    - एचएमआईएस तलवार पर 'भारत छोड़ो' का नारा लगाने वाली टुकड़ी की गिरफ्तारी
    - आईएनए के मुकदमे
    - इंडोनेशिया में भारतीय सैनिकों का प्रयोग
    - रॉयल इंडियन नेवी के कमांडर बी.सी. दत्त की गिरफ्तारी।
- अन्य रेटिंग जल्द ही एचएमआईएस हिंदुस्तान, कराची जैसी हड़ताल में शामिल हो गईं।
- 23 फरवरी 1946: वल्लभभाई पटेल और जिन्ना के समझाने पर नेवी ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- विद्रोह का समर्थन: भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी।
- निंदा कीगयी : कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा।
- गांधीजी के अनुसार बगावत का समय गलत था।
- नतीजा: ब्रिटेन ने महसूस किया कि अब भारत को अपना उपनिवेश बनाकर रखना संभव नहीं है।

राजनीति विज्ञान एवं राजनीति सिद्धान्त

- राजनीति शब्द अग्रेजी के Politics का हिन्दी रूपान्तरण है। Politics शब्द यूनानी भाषा के Polis (पॉलिस) शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है। नगर–राज्य।
- ईसा से 500 वर्ष पूर्व यूनान के नगर–राज्यों के अध्ययन के लिए सर्वप्रथम पॉलिस शब्द का प्रयोग किया गया।
- अरस्तु की पुस्तक – Politics

आधुनिक संदर्भ में विभिन्न विद्वानों द्वारा राजनीति के लिए अलग–अलग शब्दों का प्रयोग किया है जो निम्न है –

- **कार्ल मार्क्स** – राजनीति को "अधः संरचना" की संज्ञा दी।
- **डेविड ईस्टन** – राजनीति को "मूल्यों के आवंटन" की संज्ञा दी।
- **बैंजामिन फ्रैंकलिन** – राजनीति को "धूर्तो का अन्तिम आश्रय स्थल" कहा।
- वर्तमान समय में राजनीति एक मानवीय प्रक्रिया है। मनुष्य के द्वारा अपने हितो की पूर्ति के लिए अनेक कदम उठाये जाते हैं उन्ही के सामूहिक रूप को राजनीति की संज्ञा दी जाती है।
- यूनान से प्रारम्भ राजनीति शास्त्र की गणना प्राचिन विज्ञानो में की जाती है लेकिन अभी तक इसके अर्थ, परिभाषा तथा क्षेत्र को लेकर विद्वानों में एकरूपता का अभाव पाया जाता है। राजनीति शास्त्र के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे – राजनीति, राजनीति विज्ञान, राजनीति दर्शन, राजनीति सिद्धान्त आदि।
- **गार्नर के अनुसार** – "राजनीति शास्त्र की उत्तनी हि परिभाषाऐं है जितने की इसके लेख है।"
- **जेलिनेक के अनुसार** – "किसी भी विषय को अच्छी शब्दावली की इतनी अधिक आवश्यकता नहीं है जितनी की राजनीति शास्त्र को है।''

राजनीति विज्ञान

- सितम्बर, 1948 में यूनेस्को में हुए राजनीति विज्ञान के विद्वानों का सम्मेलन हुआ जिसमें इस विषय का नामकरण "राजनीति विज्ञान" किया गया।
- राजनीति विज्ञान का जनक अरस्तु को माना जाता है।
- राजनीति विज्ञान की प्रारम्भिक अभिव्यक्ति भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों विचारको में होती है।
- भारतीय विचारको में मनु व कौटिल्य के विचारों में सर्वप्रथम राजनीति विज्ञान की अभिव्यक्ति होती है।
- कौटिल्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में दण्ड का सिद्धान्त प्रतिपादित किया तथा यही दण्ड सिद्धान्त वस्तुतः आज का राजनीति विज्ञान है।
- पाश्चात्य जगत में सर्वप्रथम अरस्तु के द्वारा 158 देशों के संविधान का तुलनात्मक परीक्षण करके राजनीति विज्ञान का प्रतिपादन किया गया।
- अरस्तु ने राजनीति विज्ञान को "सर्वोच्च विज्ञान" की संज्ञा दी।
- आधुनिक संदर्भ में राजनीति विज्ञान शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम "गॉडविन व मेरी बुल्सट्रोनेक्राफ्ट" के द्वारा किया गया।

- **राजनीति विज्ञान के अर्थ, परिभाषाओं तथा क्षेत्र को लेकर दो दृष्टिकोण प्रचलित हुए**

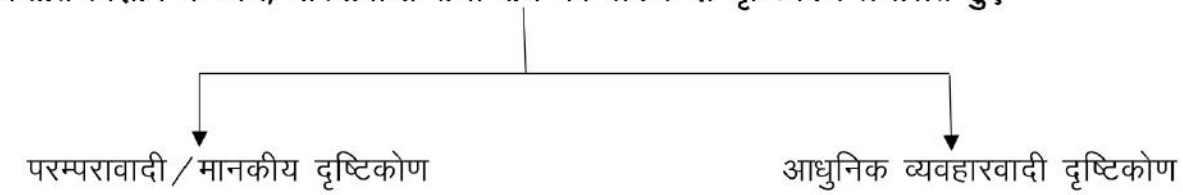

परम्परावादी दृष्टिकोण

ईसा पूर्व 6 शताब्दी से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध तक का समय परम्परावादी दृष्टिकोण का माना जाता है।

- यह दृष्टिकोण कल्पनात्मक एवं आदर्शनात्मक है जो मूल्यो पर विशेष बल देता है।
- यह नैतिक दृष्टिकोण है अर्थात् इसका संबंध "क्या होना चाहिए" से है।
- इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक प्राणी बनाना तथा आदर्श राज्य की स्थापना करना था।
- परम्परावादी दृष्टिकोण के अर्थ को स्पष्ट करनें के लिए इसे 4 भागों में बाँटा गया है –

1. राज्य का अध्ययन

मैकियावली ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक "द प्रिंस" में राज्य शब्द का प्रयोग किया। इसके समर्थको का मानना है कि राजनीति केवल राज्य का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत राज्य की उत्पत्ति, उसका स्वरूप, राज्य का अन्य संस्थाओ के साथ संबंध एवं राज्य के भविष्य का अध्ययन किया जाता है।

परिभाषाएँ

- गार्नर के शब्दो में "राजनीति विज्ञान का प्रारम्भ एवं अतं राज्य के साथ होता है।"
- **गैटेल** – "राजनीति विज्ञान राज्य का विज्ञान है तथा इसके अन्तर्गत राज्य के अतीत, वर्तमान, भविष्य का तथा राजनीतिक संगठन एवं संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।"
- जेम्स के अनुसार "राजनीति विज्ञान राज्य का विज्ञान है।"
- **एलंटशली** के अनुसार "राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है जिसका संबंध राज्य से है जो यह समझाने का प्रयास करता है कि राज्य के आधारभूत तत्व क्या है, उसका संगठन क्या है, उसकी प्रकृति एवं विकास को समझने का प्रयत्न करता है।"

2. सरकार का अध्ययन

इसके समर्थको का मानना है कि राज्य एक अमूर्त तत्व है जिसका मूर्त तत्व / स्वरूप सरकार होता है। राज्य की इच्छाओ की वास्तविक क्रियान्विति सरकार के द्वारा ही की जाती है। अतः राजनीति विज्ञान केवल सरकार का अध्ययन करता है।

परिभाषाएँ

(i) सीले के अनुसार "राजनीति शास्त्र सरकार संबंधी तत्वों का ठीक उसी प्रकार अध्ययन करता है जैसे कि अर्थशास्त्र सम्पत्ति का जीवविज्ञान जीवन का।"

(ii) **लीकॉक** – "राजनीति विज्ञान केवल सरकार से संबंधित विषय है।"

(iii) **पॉलजैनेट** – "राजनीति शास्त्र सामाजिक शास्त्र का वह भाग है जिसमें राज्य के आधार तथा शासन के सिद्धांतो पर विचार किया जाता है।"

3. राज्य तथा सरकार दोनो का अध्ययन

इसके समर्थको के अनुसार राज्य तथा सरकार के बीच कोई विरोध नहीं हैं एवं दोनों एक दूसरे के पूरक होते है।

इसलिए राजनीति विज्ञान में राज्य तथा सरकार दोनों का अध्ययन किया जाता है।

परिभाषाएँ

1. **गिलक्रइस्ट** – "राजनीति विज्ञान में राज्य तथा सरकार दोनो की सामान्य समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।"
2. **पॉलजैनेट** – "राजनीति विज्ञान समाजशास्त्र का वह भाग है जिसमें राज्य के आधार तथा सरकार के सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।"
3. **डिमॉक** – "राजनीति विज्ञान का संबंध राज्य तथा उसके यंत्र सरकार से है।"
4. **मानवीय तत्व** – व्यक्ति राजनीति विज्ञान की आधारभूत इकाई है तथा राजनीति विज्ञान में राज्य, सरकार तथा अन्य संस्थाओं का अध्ययन इसलिए किया जाता है क्योंकि ये सभी मनुष्य के कार्य करती है।

परिभाषाएँ

(i) **लॉस्की** के अनुसार "राजनीति विज्ञान के अध्ययन का संबंध संगठित राज्यों से संबंधित मनुष्य के जीवन से है।"

(ii) **हरमन टेलर** – राजनीति विज्ञान के सम्पूर्ण स्वरूप का निर्धारण उसकी मुनष्य संबंधी मान्यताओं से होता है।

- इस प्रकार परम्परावादी दृष्टिकोण के अनुसार राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें मानव जीवन के राजनीति पक्ष का तथा इस पक्ष से जुड़े होने के कारण राज्य, सरकार तथा अन्य संस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।
- परम्परावाद के अनुसार राजनीति विज्ञान का क्षेत्र
- **फ्रेडरिक पॉलक** ने दो भागों में बाँटा

- **विलोबी** ने राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में राज्य, शासन, कानून को शामिल किया।
- परम्परावादी दृष्टिकोण की विशेषताएँ
  - (i) आदर्शात्मक तथा कल्पनात्मक है।
  - (ii) नैतिकता तथा मूल्यों पर विशेष बल
  - (iii) कानूनी, औपचारिक संस्थाओं के अध्ययन पर बल
  - (iv) वर्णात्मक एवं विवरणात्मक
  - (v) संकीर्ण अध्ययन अर्थात् केवल विकसित देशों से संबंधित अध्ययन
  - (vi) अध्ययन पद्धति – **निगमनात्मक**

1. राज्य

- राज्य का अर्थ – अंग्रेजी शब्द State लेटिन भाषा के Status शब्द से निकला है जिसका अर्थ किसी व्यक्ति के सामाजिक से होता है जिसका बाद में अर्थ सारे समाज के स्तर से हो गया।
- 'राज्य' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरस्तु के द्वारा किया गया।
- सबसे पहले 16 वीं शताब्दी में इटालवी राजनीति विचारक निकोलो मैकियावेली (1469–1527) ने STATO शब्द का प्रयोग किया।
- इसी शब्द से STATE या राज्य शब्द की उत्पत्ति हुई।
- मैकियावेली ने राज्य की परीभाषा ऐसी सत्ता के रूप में दी जो मनुष्यों के ऊपर शक्ति का प्रयोग करती है।
- 16 वीं शताब्दी में फ्रांसीसी विचारक 'ज्यां बोंदा' ने राज्य के लिए रिपब्लिक शब्द का प्रयोग किया।
- गार्नर के अनुसार – ''राजनीति शास्त्र का प्रारम्भ व अन्त राज्य के साथ ही होता है।''
- हरबर्ट स्पेन्सर जैसे व्यक्तिवादी की दृष्टि में यह 'एक आवश्यक बुराई' है।
- मार्क्स के लिए राज्य एक वर्गीय संस्था है।
- यूनानी विचारक प्लेटो, अरस्तु राज्य के लिए Palis शब्द का इस्तेमाल करते हैं जिसका अर्थ है – 'नगर राज्य'।

राज्य उत्पत्ति के सिद्धान्त

1. दैवीय उत्पत्ति सिद्धान्त – (रॉबर्ट फिल्मर)

- यह सबसे प्राचीन सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त की प्रमुख मान्यता यह है कि राज्य ईश्वर द्वारा निर्मित संस्था है।
- सेंट आगस्टाइन ने अपने ग्रन्थ ''सिटी ऑफ गौड में राज्य को ईश्वरीय अनुकृति कहा है।
- मार्टिन लूथर ने राज्य को दैविक संस्था माना।

2. शक्ति सिद्धान्त (सर्वप्रथम – मैकियावेली)

वाल्टेयर ने लिखा कि ''प्रथम राजा एक भाग्यशाली योद्धा था।''
समर्थक – थ्रेसीमेकस, ओटंटो वॉन, बिस्मार्क, माओत्से तुंग।
आधुनिक विचारक – जैक्स, लासवेल, फैटलीन, E.H. कार, मार्गेन्थाऊ, रॉबर्ट डहल, कामटे, ब्लंटशली, ट्रीटस्के।
आलोचक – बोंदा, रूसो, हीगल, काण्ट, लीकॉक, ग्रीन जैसे आदर्शवादी विचारक।

3. पितृ प्रधान सिद्धान्त – 'सर हैनरी मैन' के ग्रन्थों – ''एनसिएस्ट लॉ'' और ''दा अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंस्टीट्यूशन्स'' में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है।
समर्थक – लीकॉक, डिग्विट, हैनरी मैन, मैकाइवर, हेकिन्स।
आलोचक – मैक्लेनन, प्रो. गिलक्राइस्ट।

4. मातृ प्रधान सिद्धान्त – पितृ प्रधान सिद्धान्त जहाँ पिता की सत्ता को राज्य की उत्पत्ति का प्रारम्भिक तत्व मानता है। उसी प्रकार मातृ प्रधान सिद्धान्त की मान्यता है कि प्रारम्भिक समाज में माता की शक्ति की प्रधानता थी।
समर्थक – मैक्लेनन, जैक्स, मॉर्गन
आलोचक – विलोबी

5. सामाजिक संविदा का सिद्धान्त
समर्थक – हॉब्स, लॉक, रूसो

6. ऐतिहासिक या विकासवादी सिद्धान्त
समर्थक – मैकाइवर, सर हेनरी मैन, फ्रेडरिक एंजल्स, गार्नर, अरस्तु (समाजशास्त्री), बर्गेस, लीकॉक, गैटेल
नोट– बाकुनिन ने सर्वप्रथम समर्थन किया।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण – इन सिद्धान्तों में विकासवादी सिद्धान्त को राज्य की उत्पत्ति का अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय सिद्धान्त माना गया है।

सामान्य रूप से राज्य के चार तत्व माने जाते हैं –

1. जनसंख्या
2. भू–भाग
3. सरकार
4. सम्प्रभुता

1. जनसंख्या – (प्लेटो, रूसो, अरस्तु)

राज्य में कितनी जनसंख्या होनी चाहिए, यह निश्चित नही है।

- प्लेटो के अनुसार राज्य की जनसंख्या – 5040
- रूसो के अनुसार जनसंख्या – 10,000
- **गार्नर के अनुसार** – ''जनता राज्य के संगठन के निर्वाह के लिए संख्या में पर्याप्त होनी चाहिए तथा वह उससे अधिक नहीं होनी चाहिए, जितनी के लिए भूखण्ड तथा राज्य के साधन पर्याप्त हो।''

2. भू–भाग – 'क्लूबर' पहला लेखक था जिसने सन् 1817 में राज्य के लिए निश्चित भूमि का होना आवश्यक माना।

- लियॉन, डिग्वी, विलोबी, सीले, ये भू – भाग को अनिवार्य तत्व नहीं मानते।
- ब्लंटशली के अनुसार – ''जैसे राज्य का वैयक्तिक आधार जनता है उसी प्रकार उसका भौतिक आधार भू–भाग है।

3. सरकार (गार्नर) – सरकार राज्य की राजनीतिक संस्था है। यह राज्य की इच्छा को व्यक्त करती है।

4. संप्रभुता – सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

- **विलोबी के अनुसार** – ''प्रभुसत्ता राज्य की सर्वोपरि इच्छा होती है।''

  प्रभुसत्ता दो प्रकार की होती हैं –
  1. बाह्य
  2. आंतरिक
- इसका तात्पर्य – राज्य पहले व्यक्ति बाद में
- राज्य साध्य व्यक्ति साधन मात्र है।

राज्य की प्रकृति

1. राज्य का सावयवी स्वरूप
2. राज्य का नैतिक स्वरूप
3. राज्य का वर्गीय स्वरूप
4. राज्य का कानूनी स्वरूप

सावयाव सिद्धान्त के समर्थक

- प्लेटो – ''राज्य व्यक्ति का वृहदत्तम रूप है।''
- प्लेटो ने राज्य की तुलना शरीर से की है। (आंगिक सिद्धान्त)
- राज्य बलूत के वृक्ष या चट्टानों से नहीं निकलता बल्कि यह उन लोगों के मस्तिष्क व चरित्र का परिणाम है जो उसमें निवास करते हैं।
- अरस्तु – ''राज्य व्यक्ति का पूर्व गामी है।''

  राज्य परिवारों तथा गाँवों का समूह है जिसका उद्देश्य पूर्ण व आत्मनिर्भर जीवन की स्थापना करना है।
- ब्लंटशली – ''राज्य पुल्लिंग, चर्च स्त्रीलिंग''

- ब्लंटशली – ''राज्य मानव शरीर का हूबहू रूप है।
- अन्य समर्थक – आदर्शवादी – (हीगल, ग्रीन, काण्ट)

- **यांत्रिक सिद्धान्त के समर्थक** – लॉक व अन्य उदारवादी पूँजीवादी विचारक।
- समझौता वादी विचारक (हॉब्स, लॉक, रूसो) इस विचार के जनक माने जाते हैं।
- टॉमस हॉब्स और लॉक ने राज्य को मनुष्यों की इच्छा के परिणाम सिद्ध करने के लिए 'सामाजिक समझौते' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

उदारवादी – व्यक्तिवादी सिद्धान्त

- उदारवादी – व्यक्तिवादी सिद्धान्त राज्य के यंत्रीय सिद्धान्त का परिणाम है।
- इसके अनुसार राज्य का निर्माण सब व्यक्तियों ने मिलकर व्यक्तिगत लाभ के उद्देश्य से किया है, अतः राज्य एक साधन है, व्यक्ति उसका साध्य है।
- जॉन लॉक को उदारवाद का जनक माना जाता है।
- इसके प्रमुख समर्थक – जॉन लॉक, एडम स्मिथ, जरमी बेन्थम, हर्बर्ट स्पेन्सर।
  नोट – एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है। उसने अपनी पुस्तक 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' में 'अहस्तक्षेप की नीति' और व्यक्तिवाद का प्रबल समर्थन किया है।

सामाजिक लोकतंत्रीय सिद्धान्त

उदारवादी दृष्टिकोण के अन्तर्गत सामाजिक लोकतंत्रीय सिद्धान्त राज्य के अहस्तक्षेपवादी सिद्धान्त का खण्डन करते हुए नागरिकों के कल्याण के लिए राज्य की सकारात्मक भूमिका के महत्व पर जोर देता है।
इसका मुख्य प्रतिपादक – एच. जे. लास्की है।
समर्थक – जे. एस. मिल, टी. एच. ग्रीन, हॉब हाउस।

मार्क्सवादी सिद्धान्त

- यह सिद्धान्त राज्य को मानव कल्याण की इकाई न मानकर शोषण का यंत्र मानता है।
- प्रवर्तक – कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंजल्स, लेनिन

  नोट –

मार्क्सवादी	– राज्य साधन
अराजकतावादी	– राज्य साधन
आदर्शवादी	– राज्य साधन
फासीवादी	– राज्य साधन

- **विलोबी के अनुसार** – राज्य के तीन तत्व होते हैं –
  1. जनसमुदाय
  2. शासन तंत्र या सरकार
  3. लिखित या अलिखित संविधान
- **ब्लंटशली के अनुसार –**
  1. भूखण्ड
  2. जनता
  3. एकता
  4. संगठन
- **सिजविक के अनुसार –**
  1. मनुष्यों का एक समुदाय।
  2. एक प्रदेश जिसमें वे स्थायी रूप से रहते हो।
  3. आंतरिक सम्प्रभुता तथा बाह्य नियंत्रण से स्वतंत्रता।
  4. एक राजनीतिक संगठन।